

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की व्यवसायिक चयन में निर्देशन एवं परामर्श की भूमिका

मुकेश कुमार¹, प्रो० निर्भय सिंह²

¹शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र, भदावर विद्या मन्दिर पी०जी० कॉलेज, बाह, आगरा

डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा उत्तर प्रदेश

²शोध निर्देशक, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा शास्त्र, भदावर विद्या मन्दिर पी०जी० कॉलेज, बाह, आगरा

डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा उत्तर प्रदेश

Received: 29/10/2025 | **Accepted:** 29/11/2025 | **Published:** 30/12/2025

सारांश

सारांश माध्यमिक स्तर शिक्षा का एक ऐसा स्तर है, जहां विद्यार्थी किशोरावस्था में प्रवेश कर चुका होता है। किशोरावस्था को मनोवैज्ञानिकों ने तूफान एवं संघर्ष की अवस्था कहा है। किशोर एवं किशोरियों में अनेक शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं, यह अवस्था सबसे जटिल अवस्था मानी जाती है। अतः इस अवस्था में छात्र-छात्राओं का सही प्रकार से मार्गदर्शन आवश्यक है। शिक्षा के द्वारा बालकों को भावी जीवन के लिए तैयार किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं, इन समस्याओं के समाधान के लिए विद्यार्थियों को निर्देशन की आवश्यकता होती है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के सामने पाठ्यक्रम में अनेक प्रकार की विभिन्नताएं पाई जाती हैं, उस समय किशोर किस विषय का चयन करें एवं किस व्यवसायिक पाठ्यक्रम का चयन करें, जिससे कि उनका भविष्य प्रकाशमय हो सके। व्यवसायिक चयन में निर्देशन एवं परामर्श की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस समय विद्यार्थियों की रुचि उनकी योग्यताओं उनकी आंतरिक शक्तियों को एक परामर्शदाता द्वारा समझकर उनको सही मार्गदर्शन दिया जाए तो उनका भविष्य उज्ज्वल हो सकता है। एवं समाज, राष्ट्र के निर्माण में भी उनका योगदान होगा। वैसे तो निर्देशन एवं मार्गदर्शन शिक्षा के सभी स्तरों पर महत्वपूर्ण है, लेकिन माध्यमिक स्तर पर इसकी महत्ता बहुत अधिक है। निर्देशन एवं परामर्श की भूमिका न केवल व्यवसायिक चयन में महत्वपूर्ण है बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के दृष्टिकोण से भी बहुत महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द : निर्देशन एवं परामर्श, व्यवसायिक चयन, विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास, माध्यमिक स्तर

प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा को विभिन्न स्तरों पूर्व प्राथमिक (शिशु) प्राथमिक (बाल) माध्यमिक (किशोर) और उच्च (युवा) में विभाजित किया गया है। सभी स्तरों के पाठ्यक्रम अलग-अलग निश्चित किए गए हैं। इन सभी स्तरों में माध्यमिक शिक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। हमारे देश की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा माध्यमिक शिक्षा को प्राप्त कर लेता है, जब कि उच्च शिक्षा को कम विद्यार्थी ही प्राप्त कर पाते हैं। माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के मध्य एक सेतु का कार्य करती है। माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम में विविधता पाई जाती है। विद्यार्थियों में विषय चयन एवं किसी व्यवसाय चयन को लेकर दुविधा बनी रहती है, कि वह किस व्यवसाय को चुने। ऐसे समय में विद्यार्थियों को निर्देशन

एवं परामर्श की आवश्यकता होती है। यदि विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और रुचियां को देखते हुए यदि उन्हें सही प्रकार का मार्गदर्शन प्राप्त हो जाए तो वह अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। निर्देशन में व्यक्ति को इस प्रकार सहायता प्रदान की जाती है की वह स्वयं अपनी समस्या का समाधान करने में सक्षम हो जाता है, अनावश्यक समय और संसाधन की बर्बादी नहीं होती है निर्देशन एवं परामर्श व्यक्ति के लिए प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। निर्देशन एवं परामर्श का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव समाज, गुरुकुलों में छात्रों को उनकी रुचि के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा दी जाती थी। भारत में मार्गदर्शन के कार्य की शुरुआत श्री सोहनलाल एवं केंजी० सैयदने की। मुंबई में व्यावसायिक निर्देशन केंद्र खोला गया वर्तमान में भारत में हर प्रदेश में सरकार मार्गदर्शन केन्द्रों का संचालन कर रही है। शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में मार्गदर्शन का बहुत महत्व है। निर्देशन एवं मार्गदर्शन के द्वारा विद्यार्थी के सभी पक्षों का संतुलित एवं सर्वांगीण विकास हो जाता है। विभिन्न अनुसंधान परिणाम से ज्ञात होता है की निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं के उचित उपयोग से विद्यार्थियों को अपनी रुचि के अनुसार व्यवसाय चुनने में सहायता मिलती है और भविष्य में वह अपने व्यवसाय में सफलता अर्जित करते हैं।



स्रोत गूगल इमेज

हेमगथन ज्वाला (2001) ने कक्षा 10 के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रुचियां तथा व्यवसायिक आकांक्षाओं का सहसंबंधात्मक अध्ययन किया अध्ययन के परिणाम स्वरूप ज्वाला ने बताया कि व्यवसायिक इच्छाओं पर निर्देशन एवं परामर्श का धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

जय श्री दास (1999) ने अपने अध्ययन में पाया की विद्यार्थी समुदायों में उनकी आवश्यकता व प्रभाव पूर्ण पाया गया निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं की व्यवहारिकता व क्रियान्वयन में और अधिक सुधार और विस्तार करने की आवश्यकता है। स्प्रिंगर नीदरलैंड (2005) में कुवैत देश में माध्यमिक लेवल पर विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं की संभावनाओं का अध्ययन किया।

शोधकर्ता ने अपने शोध परिणाम में पाया कि नेशनल स्तर पर निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं का प्रचार प्रसार विस्तार किया जाना चाहिए।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

सिंह वंदना, रावत शीतल (2020) ने दिल्ली में सेकेंडरी और सीनियर सेकेंडरी स्कूलों में चलने वाले निर्देशन एवं परामर्श सुविधाओं की स्थिति जानने का प्रयत्न किया गया शोध परिणामों में पाया गया की सभी परामर्शदाता अपने कार्य को भली भांति कर रहे हैं कुछ समय की कमी और कुछ दबाव के कारण कुछ परेशानियां उत्पन्न हो जाती हैं। सभी परामर्शदाता अपने अधिकतम प्रयास से विद्यार्थियों को व्यक्तिगत स्तर पर भी निर्देशन एवं परामर्श समय-समय पर उपलब्ध कराते हैं।

कंवरदीप, डॉ महेश्वरी किरण (2023) ने अपने शोध पत्र शीर्षक विषय चयन में परामर्श के प्रभाव का अध्ययन के अंतर्गत माना की माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में विज्ञान, वाणिज्य व कला विषयों के चुनाव के प्रति परामर्श

से पूर्व व परामर्श के बाद अंतर पाया गया परामर्श के उपरांत विद्यार्थियों पर जब परीक्षण किया गया तो विद्यार्थियों ने अपनी बुद्धि रुचि तथा क्षमता के आधार पर विषय का चयन किया साथ ही रुचि के विषय के बारे में भी परामर्शदाता से विभिन्न प्रकार की जानकारी प्राप्त की ।

आर्य हरीश रुचि (2020) में एक शोध पत्र स्कूलों में प्रभावी शिक्षण में मार्गदर्शन और परामर्श की भूमिका पर प्रस्तुत किया इसके अंतर्गत पाया गया की काउंसलिंग से छात्रों को करियर के चुनाव में सहायता मिली जिससे विद्यार्थी अपनी पसंद के अनुसार व्यवसाय का चुनाव कर सके और उनकी इस प्रकार की शिक्षा में सहायता दी जाती है वर्तमान समाज एक जटिल समाज है इसमें निरंतर मार्गदर्शन आवश्यक है ।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

उपरोक्त अध्ययनों से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की व्यवसायिक रुचि और विषय चयन में निर्देशन एवं परामर्श की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं से विद्यार्थियों के व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है विद्यार्थी भ्रमित नहीं होते हैं अपने लक्ष्य तक आसानी से पहुंचते हैं। भारत में प्रत्येक प्रदेश के प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय में निर्देशनकर्ता एवं परामर्शदाता की नियुक्ति होनी चाहिए, जिससे संसाधन और समय की बचत होगी और शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा किया जा सकेगा ।

Freed c. Lunenburg(2010) school guidance and counseling services. के अनुसार शिक्षा का कार्य प्रत्येक छात्र को उसकी शैक्षिक व्यवसायिक सामाजिक और भावनात्मक क्षेत्र में सहायता प्रदान करना है। मार्गदर्शन शिक्षा का अभिन्न अंग है। इस अध्ययन में परामर्शदाता की भूमिका और परामर्श कार्यक्रमों की जांच की गई ।

मिश्रा अचला एवं सिंह रंजीत बहादुर (2024) ने अपने शोध पत्र के शीर्षक समावेशी शिक्षा में निर्देशन परामर्श और नई प्रवृत्तियां में पाया की समावेशी शिक्षा को प्रभावशाली बनाने में निर्देशन एवं परामर्श की अत्यंत महत्वात्मक है शिक्षकों को मार्गदर्शन प्रदान करने में विद्यार्थियों की सहायता करनी चाहिए ।

तिवारी शुभा (2017) ने अपने शोध अध्ययन रायपुर जिले में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर विद्यार्थियों के विषय चयन में शिक्षक एवं पालक की निर्देश के रूप में भूमिका में पाया कि शिक्षा का विस्तार करने में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है किसी भी समस्या के समाधान में शिक्षक हर संभव सहायता प्रदान करते हैं।

यह अध्ययन शोध अंतराल को प्रदर्शित करते हैं विद्यार्थियों के व्यवसायिक चयन में निर्देशन एवं परामर्श अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा यह अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सभी पक्षों का विकास करने में सहायता होगा।

उद्देश्य

1. निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं को प्रभावशाली बनाना ।
2. माध्यमिक स्तर पर निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता लाना ।
3. माध्यमिक विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित करना ।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध में विषय वस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया गया है। जिसके अंतर्गत अनेक स्रोतों से विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को इकट्ठा किया गया है। अध्ययन के लिए अनेक पुस्तकों, वेबसाइट, शोध पत्रों एवं द्वितीयक सामग्री का गहनता से अध्ययन कर विश्लेषण किया गया है। इसमें शोधकर्ता ने अपने अनुभव अवलोकन को सूचना संग्रह आधार के रूप में उपयोग किया है। शोधकर्ता द्वारा विषय वस्तु विश्लेषण पद्धति का उपयोग कर उपलब्ध सामग्री, डाटा तथ्य शामिल कर निष्कर्ष की विश्वसनीयता व प्रमाणिकता स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

अनुसंधान परिसीमन

- प्रस्तुत शोध माध्यमिक विद्यालय स्तर तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोध व्यवसायिक चयन के क्षेत्र तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोध निर्देशन एवं परामर्श के क्षेत्र तक सीमित है।
- इस शोध में विषय वस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया गया है।
- अध्ययन से संबंधित ज्ञानकारी विभिन्न स्रोतों से इकट्ठी की गई है जिनमें शोध पत्र शोधन जनल (राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय) एनसाइक्लोपीडिया, नेट, वेबसाइट एवं सेकेंडरी डाटा का प्रयोग किया गया है।
- संग्रहित आंकड़ों का गहनता से विश्लेषण किया गया है।
- शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत ज्ञान अवलोकन एवं अनुभव के आधार पर प्राप्त ज्ञान को आंकड़ों के संग्रह के आधार के रूप में प्रयोग किया है।

सूचनाओं का वर्गीकरण एवं आलोचनात्मक विश्लेषण

आज का समाज इतना जटिल है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निर्देशन एवं परामर्श आवश्यक है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को जिस व्यवसाय में रुचि होती है और उसी के अनुसार उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान कर दिया जाए, तो उनका भविष्य संभल जाता है, और वह भविष्य में समाज और राष्ट्र का विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान करते हैं। इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी के लिए निर्देशन एवं परामर्श उनकी अपने जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम में बहुत विविधता है इसमें से वह सही विषय का चुनाव कैसे करें, इसके लिए उनका मार्गदर्शन बहुत आवश्यक है।

निर्देशन एवं परामर्श

निर्देशन एक इसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति को उसकी समस्या का समाधान करने में सक्षम बनाया जाता है। जिसमें वह स्वयं अपनी क्षमताओं व संभावनाओं, अन्तर्निहित शक्तियों को पहचानकर अपनी समस्या का समाधान करने योग्य हो जाता है। निर्देशन में मुख्य बिंदु व्यक्ति होता है।

निर्देशन के प्रकार

- शैक्षिक निर्देशन:-** शिक्षा के क्षेत्र में दिया गया निर्देशन शैक्षिक निर्देशन कहलाता है।
- व्यवसायिक निर्देशन:-** व्यवसायिक क्षेत्र में दिया गया निर्देशन व्यवसायिक निर्देशन कहलाता है।
- व्यक्तिगत निर्देशन:-** विद्यार्थियों को उनकी भावनात्मक समस्याएं एवं समायोजन संबंधी समस्याओं के लिए दिया गया निर्देशन व्यक्तिगत निर्देशन कहलाता है।

परामर्श

किसी व्यक्ति को राय देना नहीं है बल्कि उसकी समस्या का समाधान करने के लिए मार्गदर्शन किया जाता है। परामर्श प्रक्रिया एक सौहार्दपूर्व वातावरण में संपन्न की जाती है इसके अंतर्गत एक दूसरे के विचारों का आपस में आदान-प्रदान किया जाता है।

परामर्श के प्रकार

परामर्श को उसके स्वरूप के आधार पर कई प्रकारों में बांटा जा सकता है।

1. निर्देशात्मक परामर्श

इस प्रकार के परामर्श में परामर्शदाता केंद्र बिंदु होता है वह अपनी योग्यता ज्ञान के आधार पर परामर्श प्रार्थी को सुझाव देता है इसके प्रवर्तक जी विलियमसन है।

2. अनिर्देशात्मक परामर्श

अनिर्देशात्मक परामर्श में प्रार्थी मुख्य केंद्र बिंदु होता है इस प्रकार के परामर्श में परामर्श प्रार्थी की आवश्यकताओं की रुचियां उसकी योग्यता के आधार पर परामर्श प्रदान किया जाता है इसके प्रवर्तक कार्ल रोजर्स हैं।

शैक्षिक परामर्श शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों को दिया जाने वाला परामर्श शैक्षिक परामर्श से पाठ्यक्रम के चयन में शैक्षिक परामर्श की आवश्यकता रहती है प्रवेश के अवसर पर यह महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

3. गैर शैक्षिक परामर्श

इस प्रकार का परामर्श सामाजिक एवं भावात्मक क्षेत्र में दिया जाता है यह परामर्श सामाजिक समायोजन में लोगों की मदद करता है।

निर्देशन एवं परामर्श और व्यवसायिक चयन में संबंध

व्यवसायिक चयन से तात्पर्य विद्यार्थियों के किसी व्यवसाय में चयन से संबंधित है विद्यार्थी अपनी रुचि एवं योग्यताओं और क्षमताओं के अनुसार किसी व्यवसाय का चयन करते हैं। उसे समय उनको उचित निर्देशन एवं परामर्श प्रदान कर दिया जाए तो उनके चयनित व्यवसाय में बेहतर परिणाम प्राप्त होते हैं। और वह अपने चयनित व्यवसाय में सफलता प्राप्त करते हैं उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली बन जाता है।

उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो जाता है और वह अपने व्यवसाय में बेहतर सफलता अर्जित करते हैं।

परामर्श के माध्यम

वर्तमान में बदलते परिदृश्य में परामर्श प्रदान करने के विभिन्न प्रकार के साधन हैं।

1. आमने सामने साक्षात्कार :- परामर्श का सबसे प्राचीन एवं सरल माध्यम है और परामर्श प्रार्थी के मध्य संवाद किया जाता है यह प्रक्रिया बहुत अच्छी मानी जाती है।
2. दूरभाष:- तकनीकी के बढ़ते प्रभाव का असर यह हुआ कि निर्देशन एवं परामर्श की प्राचीन प्रक्रिया में भी परिवर्तन हो गया आज दूर बैठे परामर्शदाता से परामर्श प्रार्थी किसी समस्या का हल फोन पर ही घर बैठे प्राप्त कर लेते हैं।
3. पत्राचार;- किसी समय परामर्श प्रक्रिया पत्राचार के माध्यम से भी प्रचलित थी डाक द्वारा यह प्रक्रिया चलती थी इसमें समय बहुत लगता था अब धीमे-धीमे यह प्रक्रिया चलन से बाहर हो गई है।
4. रेडिओ तथा दूरदर्शन:- आज के समय में रेडियो एवं दूरदर्शन के माध्यम से भी परामर्श का कार्य किया जा रहा है।
5. इंटरनेट:- आज के समय तकनीकी ने जीवन को सुगम बना दिया है आप घर बैठे ही विश्व की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं परामर्श प्रक्रिया इंटरनेट के माध्यम से कंप्यूटर द्वारा प्रदान की जाती है।



स्रोत गूगल इमेज

शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श की उपयोगिता

- व्यवसायिक चयन में सहायक:-** विद्यार्थियों के सामने व्यवसायिक चयन की बहुत सारे अवसर होते हैं | उनको देखकर विद्यार्थी भ्रमित हो जाते हैं विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार व्यवसाय के चयन में सहायता मिल जाती है तो वह विद्यार्थी अपनी पसंद के व्यवसाय में सफल हो जाते हैं इस प्रकार निर्देशन एवं परामर्श विद्यार्थियों के व्यवसायिक चयन में बहुत ही सहायक है।
- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक:-** विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सभी पक्षों का विकास करना बहुत ही महत्वपूर्ण है विद्यार्थी के मानसिक विकास के साथ-साथ उसका शारीरिक विकास एवं भावात्मक विकास भी बहुत महत्वपूर्ण है।
- मानव संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग:-** विद्यार्थियों को सही समय पर निर्देशन एवं परामर्श सेवाएं प्रदान कर दी जाएं तो उनके कार्य करने की क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है विद्यार्थियों की उनकी रुचि के आधार और वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए यदि व्यवसायिक चयन में सहायता की जाती है तो वह चयनित व्यवसाय में अच्छा कार्य करके दिखाते हैं| जिससे संसाधनों का अनावश्यक बर्बादी नहीं होती है | इसका मूल उद्देश्य सही व्यक्ति को सही काम पर लगाना है | जिससे उपलब्ध संसाधनों का सही उपयोग हो सके।
- जीविकोपार्जन में सहायक:-** विद्यार्थी जब चयनित व्यवसाय में सफल हो जाते हैं| तो वह उनकी जीविका का साधन बन जाता है| जिससे वह अपना और अपने परिवार का पालन पोषण सही प्रकार से करते हैं| भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में जहां लोग अच्छे रोजगार के अवसर तलाश रहे हैं तब निर्देशन एवं परामर्श और अधिक आवश्यक हो जाता है।

निष्कर्ष

निर्देशन एवं परामर्श वर्तमान समय में न केवल व्यवसायिक चयन में महत्वपूर्ण है , बल्कि समस्त शैक्षिक प्रक्रिया में इसका अद्वितीय स्थान है| शिक्षा निर्देशन एवं परामर्श साथ-साथ चलने वाली प्रक्रिया है ऐसा प्रतीत होता है कि एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है| शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर निर्देशन एवं परामर्श सेवाएं बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन माध्यमिक स्तर पर और अधिक महत्वपूर्ण है, सामान्यतः रूप में हम कह सकते हैं कि निर्देशन एवं परामर्श सेवाएं विद्यार्थियों को उनके लक्ष्य तक पहुंचने में सहयोग करती हैं जिसके माध्यम से विद्यार्थी एक असंभव लक्ष्य को भी प्राप्त कर लेते हैं| एवं अपना जीवन बेहतर तरीके से व्यतीत करते हैं। और समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान देंगे।

संदर्भ

- गुप्ता , प्रोफेसर एसपी / गुप्ता , डॉक्टर अलका: उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांत एवं व्यवहार।
- चंद्र , रमेश: निर्देशन एवं परामर्श 2006
- ओबेरॉय , एस०सी०: शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श।
- Hmingthan Zuala (2001): “A Study Of Vocational Interest S And Occupation Aspiration Of Class 10Th Student Of District Headquarter Of Mizoram As Related To Sex And Academic Achievement” Department Of Education North Eastern Hill University Of Shillong.
- दास जयश्री (1999): “विद्यार्थी एवं समुदाय के लिए निर्देशन सेवाओं का अभिकल्प निर्माण क्रियान्वयन एवं प्रभावित का अध्ययन”: शोध प्रबंध, बड़ौदा विश्वविद्यालय
- स्प्रिंगर नीदरलैंड (2005): “स्कूल गाइडेंस एंड काउंसलिंग इन कुवेत बैकग्राउंड प्रोस्पेक्टस एंड लिमिटेशंस” इंटरनेशनल जर्नल फॉर दा एडवांसमेंट का काउंसलिंग वॉल्यूम - 16,(3) 19 5 204

7. सिंह बंदना रावत शीतल (2011): “दिल्ली के प्रशासकीय विद्यालय में चलने वाले निर्देशन कार्यक्रमों की स्थिति एक अध्ययन” 2011
8. कवरदीप डॉक्टर महेश्वरी (2023): “विषय चयन में परामर्श के प्रभाव का अध्ययन” अपनी माटी अंक 40, ISSN 2322-0724
9. आर्य हरीश, डॉ रुचि (2020): “स्कूलों में प्रभावी शिक्षण में मार्गदर्शन और परामर्श की भूमिका” शोधशोर्यम इंटरनेशनल साइंटिफिक रिफ्रीड रिसर्च जर्नल 2020 SHISRRJ वॉल्यूम - 3, इश्यू - 3, ISSN -2581-6306,
10. तिवारी शुभा (2017): “रायपुर जिले में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के विषय चयन में शिक्षक एवं पालक की निर्देशक के रूप में भूमिका” शोध प्रबंध, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय रायपुर छत्तीसगढ़।

Cite this Article:

मुकेश कुमार, प्रो० निर्भय सिंह (2025) माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की व्यावसायिक चयन में निर्देशन एवं परामर्श की भूमिका ”. *Chaitanya Samvad Interdisciplinary Journal of Research*, 1(3), 32–38.

Doi: <https://doi.org/10.65250/chaitanyasamvad.v1i3.4>

Journal URL: <https://chaitanyasamvad.com/>



This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](#)

chaitanya samvad
Conscious Conversations | Meaningful Connections